समाज रत्न - श्रीमती चिरोंजाबाई जैन

19वी शताब्दी में बुदेलखंड के एक परिवार ने शिकोहाबाद (उ.प्र.) में जाकर कपड़ा व्यापार प्रारंभ किया। अपनी मातृभूमि से असीम प्यार था अपनी आय का तीन चौथाई हिस्सा अपने जरुरतमंद भाईयों पर खर्च करते थे। ऐसे उदारमना धार्मिक करुणामयी व्यक्तित्व थे गोलालारे सेठ मौजीलाल। इनके यहां जन्मी पुत्री चिरोंजाबाई पिता की दुलारी धार्मिक संस्कारों में पली बढ़ी विवेकवान व प्रतिभाशाली बिटिया का विवाह टीकमगढ़ रियासत के सिमरा गांव के प्रतिष्ठित परिवार के श्री भैय्यालाल सिंघई से बड़ी धूमधाम के साथ संपन्न हुआ।

विवाह के कुछ समय पश्चात ही परिवार ने गिरनारजी यात्रा को प्रस्थान किया। अचानक पावागढ़ में सिंघई भैयालाल का निधन हो गया। अत्यधिक वियोग में चिरोंजाबाई के मन में आत्महत्या का विचार आया । विचारों के प्रवाह में वे कुएँ पर पैर अंदर डालकर प्रयास करने ही वाली थी कि अंर्तमन में विचार आया कि यदि वे इस कृत्य में सफल नहीं हुई तो शारीरिक पीड़ा के साथ अपयश भी होगा। तुरंत वापस धर्मशाला आकर मंदिरजी में जिन बिम्ब के सम्मुख प्रायश्चित कर आजन्म कई कठोर नियमों का प्रण लिया, जिनका पालन आजीवन किया। तीर्थयात्रा जारी रख गिरनारजी के दर्शन पश्चात घर पहुंचकर पति वियोग का दु:ख यह सोचकर मंद किया कि अपना समय धर्मकार्य एवं सद्कार्य में लगाएंगी। सिमरा में पति की अच्छी साहूकारी थी उन्होंने तय किया कि सौ रुपये तक जिनसे लेना है वह सब छोड़ती हूँ और सौ रुपये से अधिक लेना है उन पर जो भी ब्याज है वह भी छोड़ती हूँ जो राशि प्राप्त होगी वह धर्मकार्य एवं भोजन इत्यादि पर ही खर्च करुंगी। उस समय रियासत के कानून अनुसार चिरोंजाबाईजी का धन राजसात होकर रियासत की ओर से जीवन यापन हेतु तीस रुपये प्रतिमाह प्राप्त होना थी । राजदरबार के प्रतिनिधि ने गांव पहुंचकर जब चिरोंजाबाईजी की धार्मिकता, परोपकारी व्यवहार देखा तो काफी प्रभावित हुआ उन्होंने फरमान जारी करा कि उनकी रक्षा की जावे जो शख़्स उनका धन न दे वह राज सरकार वसूल कर उन्हें दिलावे। इस प्रकार उनकी सम्पत्ति की पूरी सुरक्षा हो गई।

यह वह समय था जब देश में पिच्छीधारी साधुओं की संख्या ना के बराबर थी। उन्होंने सिमरा के मंदिर में संगमरमर की वेदी का निर्माण कर प्रतिष्ठा कराई। गांव में क्षुल्लक मोहनलाल आए उनका चातुर्मास संपन्न कराया। चातुर्मास के दौरान अनेको साधर्मी सिमरा आने लगे, उनके भोजन की व्यवस्था वे घर पर ही करती रही।

चातुर्मास की अवधि में जतारा से तीन दर्शनार्थी पं. करोड़ीमल भायजी, श्री मोतीलाल वर्णी व श्री गणेशप्रसादजी क्षुल्लक जी के दर्शनार्थ पहुंचे। भोजन की व्यवस्था चिरोंजाबाई ने अपने निवास पर की, भोजन के समय अपरिचित गणेश प्रसाद संकोचवश मौन थे। तभी चिरोंजाबाई को अहसास हुआ कि उनके स्तन से दुग्धधारा का प्रवाह हुआ और ऐसा प्रतीत हुआ कि गणेश प्रसाद से उनका जन्म–जन्मांतर का संबंध है। पुत्रवत स्नेह में उन्होंने आनंदपूर्वक भोजन ग्रहण करने का आग्रह कर कहा '' मैं तुम्हारी धर्ममाता हूँ, यह घर तुम्हारे लिये है कोई चिंता न करो, मैं जब तक हूँ तुम्हारी रक्षा करुंगी।''

घटना का यह क्षण जैन धर्म शिक्षा के इतिहास का स्वर्णिम क्षण है। उस समय व्यक्त की भावना के क्रियान्वयन से ही 20 वर्षीय गणेशप्रसाद समाज के प्रात: स्मरणीय गणेशप्रसाद वर्णी बन सके। किसानों का कर्ज छोड़ बाईजी सिमरा से बरुआ सागर आ गई, रहने का मकान मंदिर को दानकर दिया। बरुआ सागर में सर्राफ मूलचंदजी के यहां दस हजार रुपये जमा कर प्राप्त ब्याज बाईजी व गणेशप्रसादजी को इच्छानुसार निरंतर प्राप्त होता रहा।

संवत् 1980 में मस्तक में तीव्रवेदना एवं आंख में मोतियाबिंद हुआ, बनारस में लाभ नहीं मिलने पर पुत्र के साथ बरुआ सागर आ गई। यहाँ एक साधारण व्यक्ति ने वनस्पति की जड़ दी जिससे उन्हें आराम मिला परन्तु मोतियाबिंद ठीक नहीं हुआ, जिसे दिखाने झांसी गई वहां एक बंगाली डाक्टर को दिखाया। डाक्टर ने भारतीयों के व्यवहार व उनके वस्त्रों पर कटु शब्द कहे तो बाईजी का स्वाभिमान आहत हुआ और वे यह कहकर वापस आ गई कि ''लोभी आदमी से ऑपरेशन कराना अच्छा नहीं'' आपरेशन का विचार त्यागकर वे ललितपुर क्षेत्रपाल में आ गई थी, तभी बाग में घूम रहे अंग्रेज डाक्टर (जो झांसी के सिविल सर्जन थे) ने बाईजी के पास जाकर कहा '' तुम्हारी आंख में मोतियाबिंद हो गया है एक आंख का निकालना तो व्यर्थ है क्योंकि उसमें देखने की शक्ति खत्म हो गई है पर दूसरी आंख में देखने की शक्ति है जो मोतियाबिंद के आपरेशन से पुन: प्राप्त हो जावेगी। बाईजी और डाक्टर में काफी चर्चा हुई, झांसी के अस्पताल का जिक्र भी आया। बाईजी की दिनचर्या व धार्मिक गतिविधियों से डॉक्टर काफी प्रसन्न हुआ और बाईजी को आश्वासन दिया किया आप झांसी आ जाओं आप जहां ठहरेंगी वहां आकर ईलाज कर दूंगा। बाईजी अपने सहयोगियों के साथ झांसी गई अंग्रेज डॉक्टर ने अपनी सारी बाते निभाई। ऑपरेशन सफल रहा । बाईजी ने डॉक्टर से यह सहमति ली कि आप रविवार को न तो मांसाहार करेंगे और ना ही अपनी पत्नी को करने देंगे।

आखिर के तीस वर्ष बाईजी के सागर में ही बिताये। जहां उन्होंने अपने ज्ञानार्जन का व्यापीकरण कर महिलाओं के लिये दोपहर में धर्म अध्ययन हेतु पाठशालाएं प्रारंभ की। जिससे महिलाओं में ज्ञानार्जन व धर्म के प्रति ललक बढ़ी। इस कार्य का प्रभाव बुदेलखंड के कई स्थानों पर भी हुआ इसी का परिणाम है कि आज भी बुंदेलखंड में शास्त्रों का गंभीर ज्ञान रखने वाली महिलाओं की संख्या अच्छी है।

माघ वि. संवत् 1992 में सागर के 25 साधर्मी बंधुओं के साथ गिरिराज सम्मेद शिखरजी की वंदना कर भगवान पार्श्वनाथ स्वामी जी की टोंक पर उन्हें अहसास हुआ कि जीवन के अब तीन माह ही शेष है अत: अपने पुत्र गणेशप्रसाद की उपस्थिति में द्वितीय प्रतिमा ली और प्रण किया कि समाधि तक एक वस्त्र धारण करुंगी। क्षुल्लिका वेश में प्राण विर्सजन करुंगी और यदि अधिक जीवित रही तो सर्वपरिग्रह त्याग नवमी प्रतिमा का आचरण करुंगी। बाईजी पुन: सागर आ गई उनका स्वास्थ्य शिथिल होने लगा, उन्होंने सभी फलों का त्याग कर दिया दवा में रस नहीं लिया। सिर्फ गेहूँ, दलिया, घी, नमक के अलावा सभी वस्तुओं का त्याग कर दिया। एक बार भोजन व पानी पीने का नियम भी ले लिया, इस दौरान वे अनवरत स्वाध्याय करती रही। पन्द्रह दिवस पश्चात शक्ति ना रहने पर वे ठेले पर मंदिर जाने लगी। श्वास रोगी होने के कारण वे लेट नही पाती थी तकिये के सहारे बैठकर मिलने वालों से कहती थी कि व्यर्थ की बातें न कर पाठ सुनायें। वर्णी मोतीलाल, पं. दयाचंद व गणेशप्रसाद आदि से सदैव धर्मशास्त्र सुनती रही। समस्त परिग्रह त्याग कर निरंतर सजग व ज्ञानवान रही।

जेठवदी 13 संवत् 1993 (सन् 1936) को संध्या 4.30 पर ॐ सिद्धाय नम: का उच्चारण कर नई पर्याय को प्रस्थान कर गई।

बाईजी सदैव सत्यनिष्ठ, अनुशासनप्रिय, समय का मूल्य जानने वाली रही अपने पर आये संकटों को पूर्वजन्म का फल माना। असाता कर्म के उदय के समय विवेक, सम्मत, करुणाजनक निर्णय लेकर सिमरा गांव में आदर सम्मान तो पाया ही और रियासत में भी अपनी अलग पहचान बनाई।

धर्मपुत्र गणेशवर्णी का लालन पालन राजकुमार जैसा किया। पढाई में व्यवधान न हो इसलिये बनारस रही, वर्णीजी के संकोची स्वभाव को समझते हुए उनकी समस्त आवश्यकताएँ पूरी की। उनके लिये हीरे की अंगूठी बनवाई, चांदी के बर्तन बनवाएँ। धर्ममाता की छाया में निश्चिंतता का जो वातावरण बना उससे ही वर्णीजी के व्यक्तित्व का विकास हुआ उनकी सोच एवं क्रियान्वयन का समाज सदैव ऋणी रहेगा। बाईजी के प्रयासों का ही फल है कि समाज को प्रात: स्मरणीय गणेशवर्णी जैसा कोहिनूर प्राप्त हुआ। जिसने पारस बनकर समाज में जैन विद्वानों के स्वर्ण युग का निर्माण किया। गोलालारीय जैन समाज जब भी समाज रत्नों का जिक्र करेगा, तब तब **बाईजी चिरोंजाबाई** का स्मरण अवश्य ही करेगा।

आलेख – **पी.सी. जैन, सागर**

स्रोत – श्री रतन चौधरी सागर से प्राप्त जानकारी के अनुसार।

व्यंग्य

लालसा

वे बोली
''काश'' ! पर्यूषण पर्व जल्दी जल्दी आते,
हमें अपने सारे वस्त्राभूषण
सभी को दिखाने के अवसर
बार–बार मिल जाते ।।

खरीददारी

पर्यूषण पर्वराज की तैयारी
उन्होंने ऐसी कराई,
बाजार से
दस नई साड़ियाँ, मैचिंग ब्लाउज़
कई नैकलेस, कंगन, परफ्यूम
व सौंदर्य प्रसाधन सामग्री,
छुप–छुप के खरीदवायी ।।

रहस्य

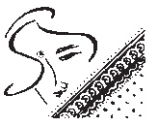

पर्यूषण पर्व पर
पत्नी के नित्य दो बार,
कई जिनालयों में जाने का रहस्य,
उनको उस दिन समझ में आया,
जब पर्वराज के बाद 20 साड़ियों को
श्रीमतीजी ने लांड्री भिजवाया ।

– अरुण कुमार जैन
ऋषि नगर एक्स., उज्जैन

पाठको की कलम से ...

बहुत अच्छा काम आप सभी कर रहे है, अच्छे कार्यों में थोड़ी बहुत परेशानियां आती ही है। हमारा पूरा सहयोग सदैव मिलता रहेगा। मेहनत सदैव सफलता का मूल होती है।

– डॉ. प्रकाशचंद जैन, चकराघाट, सागर

गोलालारीय दर्शन हेतु कुछ सुझाव है । पत्रिका नियमित रुप से प्रकाशित हो। पत्रिका का आकर्षण बढ़ाने के लिये उच्चपदों पर आसीन समाज के प्रशासनिक अधिकारियों , डाक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक का परिचय व उनकी सलाह नियमित रुप से प्रकाशित हो । कोई भी एक बीमारी की पूर्ण जानकारी, महिलाओं के लिए गृहउपयोगी जानकारी, वास्तुशास्त्र से संबंधित जानकारी का प्रकाशन नियमित हो।

– अशोक जैन, तेलीपुरा, इतवारी, नागपुर

गोलालारीय दर्शन पूर्व में मुझ प्राप्त होता रहा है परन्तु गत अंक प्राप्त नहीं हो पाया है संभवत: डाक में कहीं गड़बडी हुई है अत: नियमित रुप से प्राप्त हो ऐसी व्यवस्था बनावें।

– डॉ. महावीरप्रसाद जैन, चन्द्रविला, सीहोर (सागर)

गोलालारीय दर्शन पत्रिका में प्रकाशित जनगणना वाला फार्म अंक प्राप्त नहीं हुआ है अंक पुन: भेजने का कष्ट करें ताकि परिवार की जानकारी भेज सके।

– महावीर जैन, उज्जैन

गोलालारीय दर्शन पत्रिका की प्रतियां सभी सदस्यों को प्राप्त नहीं हो पाती हैं कई लोग शिकायत करते है एवं नियमित रुप से पत्रिका प्राप्त नहीं हो रही है। कृपया इस बात का ध्यान रखें कि सभी के पते पर पत्रिका भिजवाई जावे।

– नेमीचंद जैन, लश्कर ग्वालियर